ये० सेरोवा

# साही के बच्चे

ये० सेरोवा

# साही के बच्चे

हमारे पूंछवाले दोस्तों के बारे में
पहेलियां, मज़ाक़ और कहानियां

चित्रकार : ब० कलाउशिन

प्रगति प्रकाशन • मास्को

# कौन अधिक धनवान?

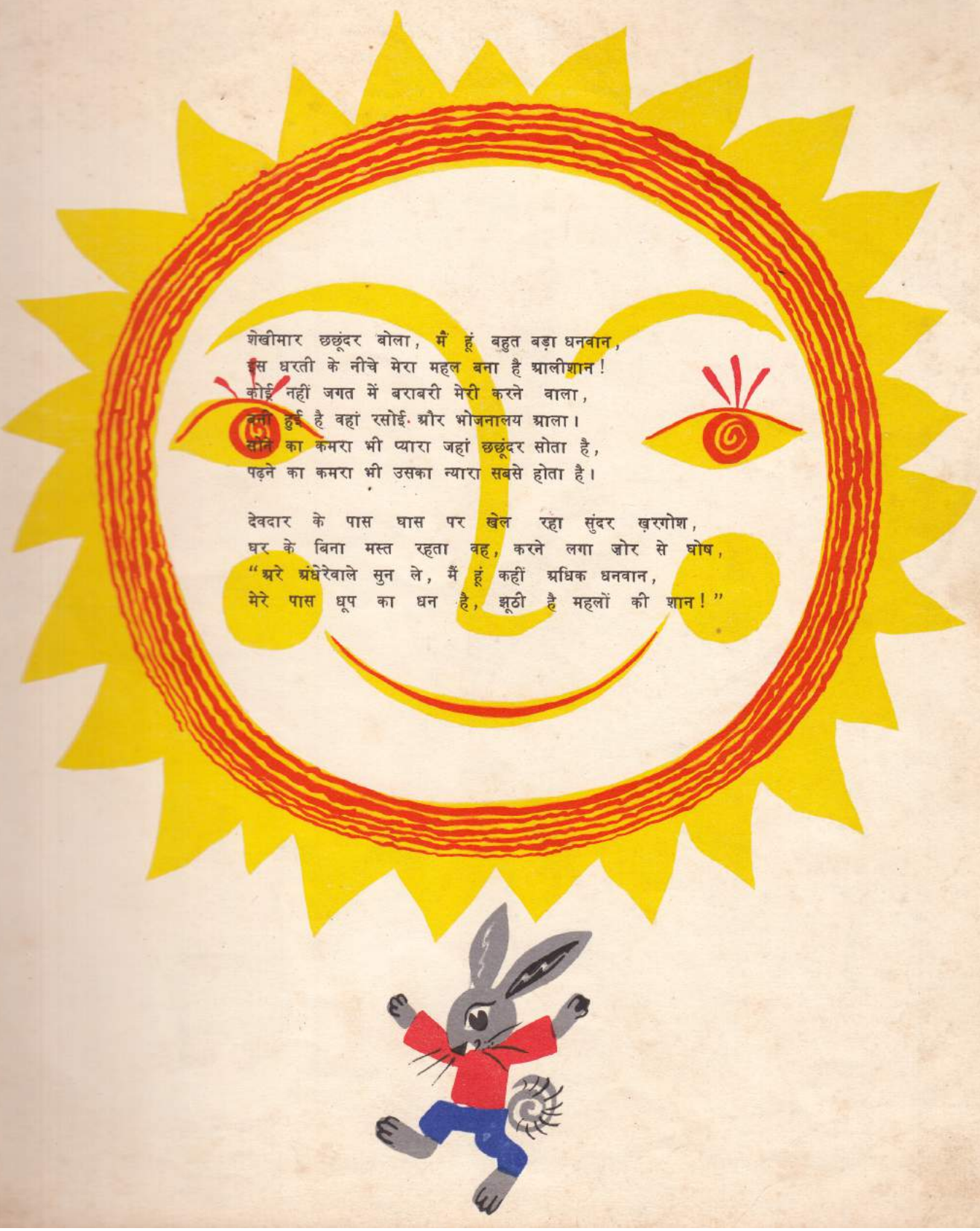

शेखीमार छछूंदर बोला, मैं हूं बहुत बड़ा धनवान,
इस धरती के नीचे मेरा महल बना है आलीशान!
कोई नहीं जगत में बराबरी मेरी करने वाला,
बनी हुई है वहां रसोई और भोजनालय आला।
सोने का कमरा भी प्यारा जहां छछूंदर सोता है,
पढ़ने का कमरा भी उसका न्यारा सबसे होता है।

देवदार के पास घास पर खेल रहा सुंदर ख़रगोश,
घर के बिना मस्त रहता वह, करने लगा ज़ोर से घोष,
"अरे अंधेरेवाले सुन ले, मैं हूं कहीं अधिक धनवान,
मेरे पास धूप का धन है, झूठी है महलों की शान!"

# पहेली

प्यारे बच्चो, प्यारे बच्चो, अपनी अक़्ल लड़ाओ,
कौन जानवर यहां चित्र में, हम को यह बतलाओ।

# लोमड़ी

मुझे लाल बालों की कहते,
बेशर्मों में गिनते रहते,
कहते बत्तख़ खाने वाली,
चूज़े रोज़ हड़पने वाली।

यह तो मुर्ग़े की बकवास,
मत करना इसका विश्वास।

# यह कौन है?

मेरे चारों ओर लगे हैं
कांटे कई हज़ार।
मेरे दुश्मन डरकर भागे,
मुझ से बारंबार!

चीख़ भेड़िये से मैं कहती,
है कांटा खाने को मन।

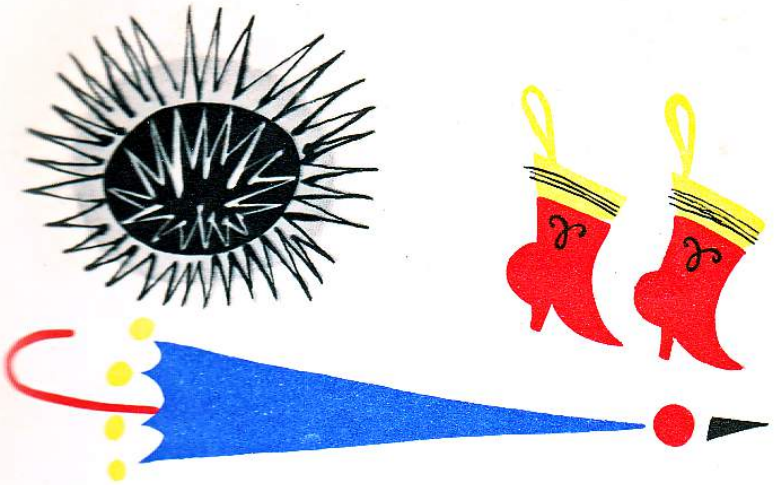

[illegible] ओर से उत्तर देता –
"भूख नहीं मुझ को इस क्षण!"

# साही के बच्चे

ये प्यारे साही के बच्चे,
आज्ञाकारी, बेहद अच्छे।

इसमें क्या अचरज की बात,
मां लेती है आड़े हाथ!

# खाना बारहसिंगे का

लोमड़ी को बारहसिंगे ने,
न्योत बुलाया खाने पर।
झाड़-पात का साग परोसा,
कितनी ख़ुश थी पाने पर!

# चूहा और पंख

शेखी मारी यह चूहे ने
पंख अगर मैं पाऊं,
तो तुम बिल्कुल यह सच मानो
मैं उक़ाब बन जाऊं।

पंख मिल गये, लेकिन उसने
रूप नया क्या पाया,
वह उक़ाब तो नहीं बना, पर
चमगादड़ बन आया।

# भेड़िये के बच्चे

पांच भेड़िये के ये बच्चे
भाग रहे हैं इधर-उधर,
खेल-खेल में दांत दिखायें
. ख़ुश होते हैं पिछा कर।

भाग-भाग कोई चुपके से
छिप जायेगा बायीं ओर,
छिप बैठेगा कोई दायें
नहीं ज़रा भी होगा शोर।

आता है बन्दूक़ लिये जो
यह क्यों इन्हें डराये?
खेल-कूद में बाधा डाले
शर्म न इसको आये।

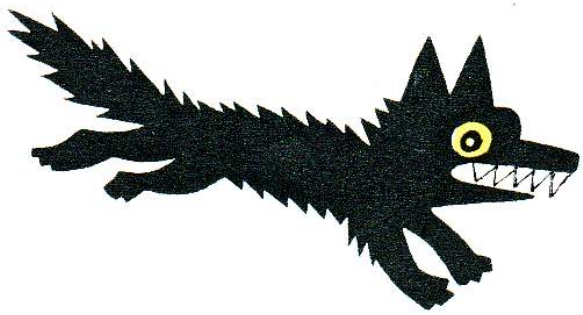

# ख़रगोश से बात

मैं हतभागा हूं ख़रगोश,
दुख के मारे ग़ायब होश।
मैंने क़िस्मत ऐसी पाई,
नंगे पग हैं मेरे भाई।
हर दम डरना मेरा काम,
इसीलिये तो खरहा नाम।

हमने पूछा, प्यारे खरहे,
बिना बात क्यों डरता है रे?
यह सारी बकवास अरे,
नंगे पांव न कभी बुरे।
नहीं अभागा तू खरहे
अच्छा, प्यारा तू है रे।
बुरा अगर कुछ है सुन ले,
बिना बात जो सदा डरे!

# घोंघी का घर

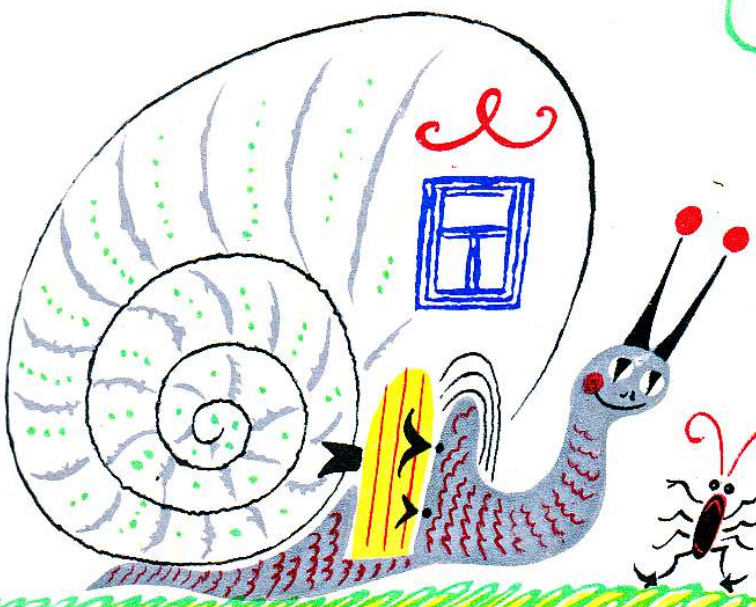

घर है उसका गोलमोल
दरवाज़ा वह रखती खोल,
सबसे करती मेलजोल,
घोंघी के हैं मीठे बोल।

नमस्कार वह सबसे करती,
ख़ुशी सभी के मन में भरती।
झूम झूम करती सत्कार,
और लुटाती रहती प्यार।

झींगा मछली चुपके आये
जानी दुश्मन झट खा जाये,
बोली, "प्यारी घोंघी राम-राम,
बाहर आओ, छोड़ो काम।"

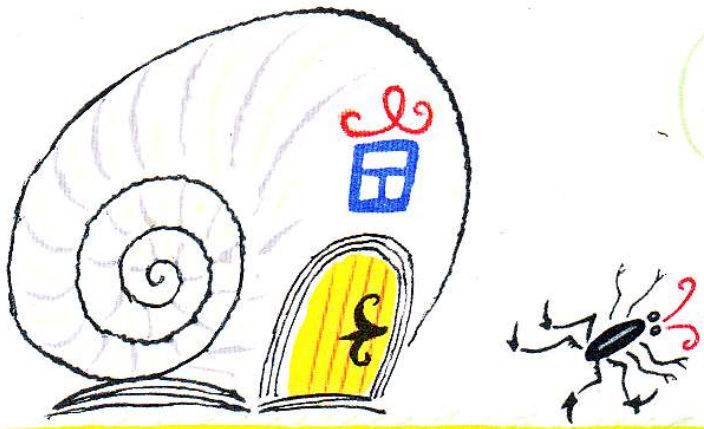

घोंघी करके सोच-विचार,
बोली, "भाग अरी मक्कार!"
बन्द कर लिया झटपट द्वार
और दिया फिर ताला मार!

© हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७५

С $\frac{70801\text{-}1095}{014\,(01)\text{-}76}$ без объявления

Е. Серова

**ЕЖОВЫ РУКАВИЦЫ**

*На языке хинди*